SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

" भारत में नारी की राजनीतिक सहभागिता"

सुनीता दुआ
शोधार्थिनी, शिक्षाशास्त्र
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

डॉ0 राजकुमार
शोध पर्यवेक्षक
श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय
गजरौला (अमरोहा) उ0प्र0

भारतवर्ष में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल (वर्तमान समय) तक बहुत–सी ऐसी महिलाएँ हुई हैं, जो अपने किसी न किसी गुण या विशेषता के कारण अपनी कीर्ति को शाश्वत बनाये हुए हैं। बुद्धिमत्ता, शौर्य, पराक्रम, वीरता, साहस इत्यादि गुणों से सुशोभित ऐसी अनेक महिलाएँ हैं, जिनकी राजनीतिक व्यवस्था के संचालन में प्रमुख भूमिका रही है। सामाजिक जीवन के विकास में पग– पग पर नारी ने अपनी सहभागिता प्रदान कर अपनी बौद्धिक क्षमताओं का परिचय दिया है। भारतीय इतिहास का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि अवसर मिलने पर अनेक बार भारत की नारी ने अपने शौर्य, पराक्रम व बुद्धि की तीव्रता का परिचय दिया है व अपने राज्य के गौरव को बढ़ाया है। भारत में नारी की राजनीतिक सहभागिता के अध्ययन को ऐतिहासिक संदर्भ में तीन कालों में विभाजित किया जा सकता है:–

1. *प्राचीन काल*
2. *मध्य काल*
3. *आधुनिक काल*

1. प्राचीन काल :–

भारतीय संस्कृति में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। स्त्रियों को शक्ति–रुप में पूजने व सम्मान देने की प्रथा प्राचीन काल से ही है। ईश्वर की परिकल्पना भी यहाँ अर्धनारीश्वर के रुप में की गयी है।[1] अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्राचीन काल निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है–

क– वैदिक कालः– वैदिककालीन परिवार व समाज में स्त्री को पुरुष के समान ही सम्मान व अधिकार प्राप्त थे। यज्ञ में स्त्रियाँ पुरुषों के साथ सहभागी होती थीं। उस काल में कुछ स्त्रियों ने ऋषियों का पद भी प्राप्त किया। जैसे– रोमशा, अपाला, घोषा, गार्गी, पौलोमी, सावित्री इत्यदि। ऋग्वेद में इन्हें ऋषिका और ब्रह्मवादिनी कहा गया है।[2] सामाजिक कार्य–कलापों में नारी का सम्माननीय स्थान था। संगठन के सिद्धान्त और व्यवहार में स्त्रियों का स्थान बहुत ऊँचा था। किसी प्रकार का पर्दा नहीं था। साधारण जीवन के अतिरिक्त समाज के मानसिक और धार्मिक नेतृत्व में भी स्त्रियों की भूमिका थी।[3]

वैदिक काल में राजनीतिक जीवन का आज के समान पृथक अस्तित्व नहीं था। जीवन के समस्त पक्ष पूँजीभूत रुप में संचालित थे। उनके संचालन में स्त्री की समान भागीदारी थी। उनकी सामाजिक व राजनीतिक स्थिति सम्माननीय थी। शस्त्र व शास्त्र विद्या में वे निपुण थीं।[4]

यजुर्वेद (अ02 / मन्त्र 22) में ऋषि प्रार्थना करता है कि हमारे राष्ट्र की नारियाँ सम्माननीया हों। वे पति–पुत्रों सहित सौभाग्यशाली बनें।[5]

वैदिककालीन समाज में बालक–बालिका को समान रुप से शिक्षित बनाया जाता था। युवतियों को स्वयंवर प्रथा में अपना पतिवरण करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। अथर्ववेद में विधवा विवाह का भी उल्लेख है।

इस प्रकार वैदिक समाज में नारी को पूर्ण सामाजिक समानता व स्वतंत्रता के अधिकार प्राप्त थे। तत्कालीन राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्था में उसे पुरुषों के समान ही धार्मिक व शैक्षिक स्वतंत्रता प्राप्त थी।[6]

प्राचीन समय में राजनीतिक सहभागिता का अर्थ ही अलग था। पुरुष वर्ग में भी सभी पुरुष नागरिकों को वे अधिकार प्राप्त नहीं थे, जिन्हें हम राजनीतिक अधिकार कह सकते है। लेकिन उसकी सामाजिक स्थिति वर्तमान समय के राजनीतिक अधिकार सम्पन्न नागरिक के

समान ही थी। नारी को पुरुष के समान ही सम्माननीय स्थान प्राप्त था। वह रानी के रुप में अपनी राय व्यक्त करने का अधिकार रखती थी। उस सलाह के राजोपयोगी व जनकल्याणकारी होने पर उसे राजा व राजकीय सभा द्वारा स्वीकृत किया जाना एक मंत्री का स्थान प्रदान करता है।

ख– महाकाव्य काल :– इस काल में नारी के देवी और दानवी रुपों का विभाजन हो गया था। समाज द्वारा निर्धारित आदर्श रुपों में ढली हुई देवी कहलाती थी व इन नियमों का उल्लंघन करने वाली दानवी। उस समय की अनेक घटनाओं द्वारा नारी के अधिकार सम्पन्न होने की बात भी दृष्टिगोचर होती है। सुभद्रा हरण की घटना से नारी के स्वतंत्रता पूर्वक विचरण करने का प्रमाण मिलता है। महाकाव्य–कालीन स्त्रियों में अम्बा, द्रोपदी, कुन्ती, गांधारी आदि का राजनीतिक व सामाजिक योगदान उल्लेखनीय है। सत्ता का प्रत्यक्ष अधिकार न मिलने के बावजूद भी नारी राजकीय कार्यों में सलाहकार के रुप में हस्तक्षेप करती थी। वह राजनीति में धर्म की पक्षधर थी। धर्म व नारी–सम्मान की रक्षार्थ ही महाभारत का युद्व हुआ।

किसी भी राज्य के उत्थान या पतन में नारी की विशेष भूमिका होती है। 'महाभारत काल में द्रोपदी, गांधारी, कुंती, सुभद्रा, चित्रांगदा आदि चरित्रों के बीच उत्पन्न बैर, ईर्ष्या व प्रतियोगिता की भावना ने उस सभ्यता, संस्कृति, धर्म, राजनीति के विनाशक महाभारत के युद्व को जन्म दिया। इसी प्रकार कौशल्या, कैकेयी, सीता, मन्दोदरी, उर्मिला आदि रामायण में वर्णित घटनाओं के लिये प्रमुख रुप से उत्तरदायी थीं। वेद व्यास और वाल्मीकि ने समाज के इतिहास की रचना में इन्हीं महिलाओं के चरित्र को उत्तरदायी ठहराया है।[7]

ग– बौद्ध व जैन काल :– समग्र मानवता के उपासक बुद्ध ने इस सत्य पर बल दिया कि स्त्री भी पुरुष के समान अपने पूर्व जन्म के सद्– असद् कर्मो के फल भोगती है। उसे भविष्य के लिये अपने कर्मो पर ही निर्भर रहना चाहिए। पुत्र द्वारा स्वर्ग की प्राप्ति हो सकती है, इस बात का उन्होंने खण्डन किया।[8]

महा प्रजापति गौतमी, यशोधरा, खेमा, प्रभावती, पुष्पचूला, प्रियदर्शना, जयन्ती आदि इस काल की प्रमुख नारियाँ थीं। जैन काल में माता के रुप को स्तुत्य माना गया। उच्च वर्ग की नारियाँ शिक्षिका, साहित्य सृष्टा एवं राजनीतिज्ञा थीं।[9]

घ– विभिन्न राजवंशीय काल :– नारी ने विभिन्न राजवंशों में भी राजकीय कार्यो में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय की पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह नागरपुर केन्द्र के एक शासक रुद्रसेन द्वितीय से हुआ। अपने पति की मृत्यु के बाद 13 वर्ष तक प्रभावती ने अपने अल्पवयस्क पुत्रों की संरक्षिका के रुप में शासन किया। वे अपने पिता की सहायता व मंत्रणा लेती थीं।[10] लिच्छवी राजकुमारी, कुमार देवी, दक्षिण भारत में पाण्ड्य राज्य की शासिका पण्डैया, थानेश्वर के शासक हर्षवर्धन की बहन व राज्य मौखरी की शासिका राज्यश्री, कश्मीर की शासिका दिछा, दक्षिण में काकतीय वंश के शासक गणपति की पुत्री रुद्राम्बा, प्रथम अरब आक्रमण के समय सिंध के शासक दाहिर की पत्नी महारानी रौर राजवंशीय काल की प्रमुख वीर व पराक्रमी नारियाँ थीं। इस काल में महिलाओं ने प्रत्यक्ष रुप से भारतीय राजनीति को प्रभावित कर शासन व्यवस्था का कुशल संचालन किया।

दिल्ली के शासन पर अपना अधिकार प्राप्त करने वाली प्रथम शासिका रजिया सुल्तान, मेवाड़ की बहादुर रानी कमलावती, विश्व इतिहास में राष्ट्रहित के लिये ममता का बलिदान देने वाली पन्नाधाय, मेवाड़ की राजमाता कर्मदेवी आदि इस युग की प्रमुख साहसी व राज्य की रक्षा के लिये सर्वस्व बलिदान की भावना रखने वाली नारी शक्ति थीं।

2. मध्यकाल :–

भारत में विभिन्न राजवंशों के पतन के बाद मुगलों का शासन प्रारम्भ हुआ। मुगल सत्ता का आरम्भ बाबर के आक्रमण से होता है। जब उसने 1526 ई0 में लोदी वंश के अन्तिम शासक इम्ब्राहिम लोदी को पानीपत के युद्ध में हरा दिया। मुगलकाल से ही मध्यकाल का आरम्भ हुआ। मुगल शासकों के साथ–साथ मुगल बेगमों ने भी भारत के राजनीतिक इतिहास को प्रभावित किया है। मुगल शासकों की अधीनता को अस्वीकार कर राजपूत नारियों की वीरता व स्वाभिमान भरी गाथाओं का यह काल प्रत्यक्ष साक्षी है। मध्यकाल की स्त्रियों के भारतीय इतिहास व राजनीति के परिप्रेक्ष्य में प्रमुख योगदान का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है–

मुगल सम्राट जहाँगीर की पत्नी नूरजहाँ एक योग्य महिला थी। उसने राजकीय कार्यों में जहाँगीर को सहायता प्रदान की तथा अनेक कलाओं को राजाश्रय प्रदान किया।[11] उसे बादशाह बेगम कहा जाता था। इसी काल में बीजापुर के शासक आदिल शाह की पत्नी चाँद बीबी प्रशासन में कुशल महिला थी। वह पति के साथ सैनिक अभियानों में भी जाया करती थी। उसने मुगल सम्राट अकबर के विरुद्ध युद्ध का संचालन किया।[12] राजनीति और शासन में निपुण

चाँदबीबी अरबी और फारसी भाषाओं की अच्छी विद्वान थी। मध्यकाल की साहसी नारियों में गोंडवाना के शासक संग्राम शाह की पुत्रवधू रानी दुर्गावती का नाम प्रमुख रुप से आता है। वह शीघ्र ही विधवा हो गयी। पति की मृत्यु के बाद उसने शासन सत्ता सम्भाल ली। अपने अल्पवयस्क पुत्र वीर नारायण की संरक्षिका बनकर कुशलता पूर्वक शासन किया व साहस का परिचय दिया। इलाहाबाद के सूबेदार शासक आसफ खां से युद्ध करते हुए घायल होने पर शत्रु द्वारा पकड़े जाने व अपमानित होने की आशंका से बचने के लिये उसने छुरा घोंपकर आत्महत्या कर ली।[13]

बुन्देला राजा छत्रसाल की पुत्रवधू वीरांगना जैतकुँवरि, जिसने पठान अफगान बगश खाँ के विरूद्ध युद्ध में बुन्देलों का नेतृत्व किया, बेलगाँव दक्षिण पूर्व में स्थित बेलगाड़ी गाँव की निवासी सावित्री बाई, जिसने शिवाजी का मुकाबला किया, वीर शिवाजी की पुत्रवधू ताराबाई, जिन्होने अल्पवयस्क पुत्र का राज्याभिषेक कर उसकी संरक्षिका के रुप में राजकाज किया, शाहजहाँ के आक्रमण के समय मुगलों से लोहा लेने वाली बुन्देलखण्ड की वीरांगना रानी पार्वती, मुगल शासक औरंगजेब से युद्धभूमि में साहस के साथ मुकाबला करने वाली वीर छत्रसाल की माँ व चम्पत राय की पत्नी रानी लाल कुँवरि आदि मध्य युग की वीर, साहसी व पराक्रमी नारियाँ थीं।

भारतीय इतिहास का मुगलकाल मुस्लिम शासकों के साथ–साथ वीर राजपूत वीरांगनाओं के शौर्य, पराक्रम व बुद्धिमत्ता से भरपूर रहा है। विदेशी सत्ता व दुश्मन शासकों के विरुद्ध इन वीरागंनाओं ने भी तलवार उठायी व अपने विरोध का प्रदर्शन किया। इस प्रकार भारतीय राजनीतिक इतिहास का मध्यकाल नारी की सहभागिता से पूर्ण रहा है।

3. आधुनिक काल :–

भारतीय राजनीति निरंतर भारत में जन्मी वीरागंनाओं के व्यक्तित्व व कृतित्व से प्रभावित होती रही है। प्राचीन काल व मध्यकाल में अनेक ऐसी महिलाएँ हुई हैं, जिन्होंने भारतीय राजनीति को अपने योगदान से समृद्ध किया है। भारतीय राजनीति में आधुनिक काल में भी महिलाओं ने अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से अपनी पहचान बनायी है तथा राजनीति को एक नई दिशा प्रदान की है।

भारतीय राजनीति के आधुनिक काल को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है–

1. 1857 से 1947 तक का समय

2. 1947 से वर्तमान समय तक।

1. सन् 1857 से 1947 तक स्वतंत्रता आन्दोलन में नारी का योगदान–

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में नारी के योगदान का आरम्भ 1857 से हुआ था, जिस समय हमारा समाज रुढ़िवादी परम्पराओं से ग्रसित था और समाज में प्रचलित रीति–रिवाजों के कारण वे अपना समुचित स्थान पाने से वंचित थीं। फिर भी वे अपना घर–बार छोड़कर आगे आयीं और विदेशी सत्ता से टक्कर लेकर सर्वोपरि आत्मत्याग भी किया।[14]

सन् 1824 में कित्तूर की रानी चेन्नमा ने इस संग्राम का श्रीगणेश किया और ईस्ट इण्डिया कम्पनी की सेना का वीरता से मुकाबला किया। सन् 1855 ई0 में संथाल विद्रोह के समय भीमाबाई ने कर्नल मालकम के साथ बड़ी वीरता से युद्व किया और उसे गुरिल्ला युद्ध में बुरी तरह पराजित किया।[15] इसके बाद 1857 की क्रान्ति विस्फोट के रुप में हमारे सामने आयी। झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने इस संघर्ष की ज्वाला प्रज्वलित करने के लिये उनके ही पदचिन्हों पर चलकर 1858 में अपने प्राणों की आहुती दी। 1857 की क्रान्ति में भाग लेने वाली महिलाओं में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, दिल्ली की बेगम जीनत महल, लखनऊ की बेगम हजरत महल, रामगढ़ की रानी अवन्ती बाई, तुलसीपुर की रानी ईश्वर कुमारी, रानी बैजा बाई, जमानी बेगम, आरकाट की महारानी तपस्वी माता, कु0 मैना, नर्तकी अजीजन बाई, पंजाव की रानी जिन्द कौर आदि अनेक नाम उल्लेखनीय हैं। ये अपने –अपने क्षेत्र में नेतृत्व कर रही थीं।[16] इस काल में अनेक महिलाएँ लड़ते –लड़ते युद्ध स्थल में देश के लिए शहीद हो गयीं।

बहुत–सी ऐसी महिलाएँ हैं, जिनका कार्य यद्यपि महत्वपूर्ण न था, किंतु परोक्ष–अपरोक्ष रुप से बहुत बड़ा योगदान था। रानी दिगम्बर कौर गोरखपुर में क्रान्तिकारियों से जा मिली। रानी टिकारी ने अपने राज्य की सुरक्षा का भार अपने कन्धों पर लिया। बुदरी की ठकुरानी ने क्रान्तिकारियों के कोष के लिये अपना खजाना खोल दिया और रानी जिन्दा पंजाब की प्रथम क्रान्तिकारी महिला थीं।[17]

स्वतंत्रता आन्दोलन (1905:1947) महिला नेतृत्व– पंजाब और बंगाल के क्रांतिकारियों को जोड़ने वाली सरला देवी उन महिला क्रांतिकारियों में से थीं, जिन्होने पंजाब में जरनल डायर के अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई। सन् 1907 में जर्मनी में भी काजी रुस्तम कामा द्वारा दिये

गये ओजस्वी भाषण में, जो उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक कांग्रेस के अधिवेशन में दिया था, गूँगे–बहरे भारतीयों की दुर्दशा और अंग्रेज सरकार के अत्याचार से अवगत कराया।[18]

सन् 1923–24 में बोरसद सत्याग्रह में महिलाओं ने बड़े पैमाने पर भाग लिया। 1928 के बारदोली सत्याग्रह में पुरुषों से अधिक महिलाओं ने भाग लिया। मनीबेन पटेल, मिथु बेन तथा भक्तबेन देसाई इस सत्याग्रह की प्रमुख नेत्री थीं। इस आन्दोलन में पहली बार शिक्षित महिलाओं के साथ अशिक्षित महिलाओं ने भी भाग लिया। दिल्ली में स्वयंसेविकाओं ने ब्रिटिश झण्डे यूनियन जैक को सैल्यूट करने से इंकार कर दिया। महिलाओं ने साबित किया कि देश के लिये स्वतंत्रता प्राप्त करने की जिम्मेदारी केवल पुरुषों की ही नहीं है। सन् 1930–31 से सविनय अवज्ञा आन्दोलन में लगभग 20 हजार महिलाएँ जेल गयीं। बीसवीं सदी का चौथा दशक भारतीय महिलाओं की देशभक्ति के चरम उत्कर्ष व प्रर्दशन का था।

भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 और महिला नेतृत्व :–

भारत छोड़ो आन्दोलन में गाँधी जी ने देश की जनता को ''करो या मरो'' का संदेश दिया। असम की महिलाओं ने इस आन्दोलन में प्रमुख रुप से भाग लिया। अनुप्रिया बरुआ तथा सुधा लता दत्त के नेतृत्व में महिला संगठनों ने कार्य आरम्भ किया। महिलाओं ने जनता को प्रोत्साहित किया। मार्च 1943 में इण्डियन इंडिपेण्डेन्स लीग सिंगापुर की महिला शाखा का उद्घाटन हुआ। श्रीमती एम0 के0 चिदम्बरम को इसका अध्यक्ष नियुक्त किया गया।[19]

12 अगस्त 1946 को लॉर्ड बेबल ने इंडियन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष पं0 नेहरु को सरकार बनाने के लिये निमन्त्रण दिया। 9 दिसम्बर 1946 को प्रथम बार विधान सभा के चुनाव हुए। इनमें 15 महिला सदस्य भी थीं।

भारतीय संविधान सभा में श्रीमती सरोजनी नायडू, अम्मू स्वामी नाथन, राज कुमारी अमृत कौर, सुचेता कृपलानी, ऐनी बेसेण्ट आदि बहुत सी महिला सदस्य थीं। ये हमारे संविधान निर्माताओं में से थीं।

2. 1947 से वर्तमान समय तक राजनीति में नारी की सहभागिता :–

आजादी के बाद भारत में राजनीतिक पदों पर रहते हुए नारी ने जन–प्रतिनिधि के रुप में सरकार के प्रत्येक स्तर पर अपना प्रभुत्व कायम किया है। आजादी के बाद भारत संघ के

राजनीतिक निर्माण व विकास में जिन महिलाओं का योगदान रहा है, उन सभी के विषय में सब कुछ लिखना अपने सीमित लेखन में असम्भव है। आजादी के बाद भारत की कोई भी राजनीतिक व सामाजिक गातिविधि ऐसी नहीं है, जिसमें महिलाओं ने पुरुषों की भांति किसी कार्य में हिस्सा न लिया हो। आजाद भारत की राजनीति को अपने योगदान से सुशोभित करने वाली कुछ महिलाओं का संक्षिप्त परिचय या नामोल्लेख इस प्रकार है–

इन्दिरा गाँधी (जन्म 19 नवम्बर 1917, मृत्यु 31 अक्टूबर 1984) :

इन्दिरा गाँधी ने सत्रह वर्ष तक भारत को सफल और सुदृढ़ नेतृत्व प्रदान किया। उनका राजनीतिक चिंतन भारतीय राजनीति की अमूल्य निधि है। भारत की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में जिस गरिमा, बुद्धिमत्ता, नैतिक दृष्टिकोण और दूरदृष्टि का परिचय दिया, वह आधुनिक इतिहास में अद्वितीय है। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने इन्दिरा गाँधी को विकासशील देशों की प्रमुख हस्ती तथा इस शताब्दी में विश्व समुदाय की महानतम राजनेता बताया। वह विश्वशान्ति और विनाश के बीच एक गुटनिरपेक्ष स्तम्भ के रुप में खड़ी रहीं।

सन् 1934 से 1957 तक कांग्रेस की उपाध्यक्ष रहीं ज्योतिबेन शुक्ल अपनी पत्रिकाओं में राष्ट्रीय जनजागरण के ओजस्वी लेख प्रकाशित करती थीं। श्रीमती दुर्गाबाई देशमुख, जिन्होंने केन्द्रीय समाज कल्याण विभाग की स्थापना की और सन् 1953 से 1963 तक इसकी चेयरमैन रहीं, वे मद्रास विधान सभा की सदस्या नियुक्त हुईं। कलकत्ता के बैथुन कालेज तथा यूनिवर्सिटी लॉ कालेज से शिक्षा प्राप्त मैती आभा 1952 से 1957 तक प0 बंगाल विधान सभा की सदस्या रहीं। वे 1962 से 1969 तक बंगाल की रिलीफ और रिहेविलिटशेन मंत्री रहीं।[20] अपनी मेहनत व लगन से राजनीति में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाने वाली राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी 1962 से 1974 तक उत्तर प्रदेश विधान सभा की सदस्या व सन् 1971 से 1972 तक कांग्रेस कार्य कमेटी की सदस्या रहीं। प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के मंत्रीमंडल में वे कल्याण राज्य मंत्री रही। भारत कोकिला के नाम से प्रसिद्ध सरोजनी नायडू सन् 1925 के कानपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष रहीं। वे उत्तर प्रदेश की राज्यपाल रहीं। सन् 1949 में उनकी मृत्यु हो गयी। सन् 1930 से 40 के दशक में स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय विजय लक्ष्मी पंडित ने आजादी के बाद देश–विदेश में भारत का नाम ऊँचा किया। स्वतंत्रता के बाद उन्हें सोवियत संघ में भारत का राजदूत नियुक्त किया गया। सन् 1953 में उन्हें संयुक्त राष्ट्र की आँठवीं बैठक का

अध्यक्ष चुना गया। वे लन्दन (1954–61) में भारत की राजदूत रहीं। 1962 से 1964 तक वे महाराष्ट्र की राज्यपाल रहीं, तथा सन् 1964 से 68 तक वे लोकसभा सांसद रहीं।[21] सन् 1974 में राज्य सभा की सदस्य रहीं। लीला दामोदर मेनन, सन् 1962 से 1967 तक स्वास्थ्य मंत्री, भारत सरकार रहीं। उत्तर प्रदेश की प्रथम महिला मुख्यमंत्री रहीं श्रीमती सुचेता कृपलानी, सन् 1953 में संयुक्त राष्ट्र संघ की आर्थिक एवं सामाजिक संस्था की वैकल्पिक सदस्या रहीं श्याम कुमारी, वर्तमान में कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गाँधी, वर्तमान मंत्री मंडल में विदेश मंत्री भारत सरकार श्रीमती सुषमा स्वराज, दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती शीला दीक्षित, तमिलनाडु की मुख्यमंत्री सुश्री जयललिता, भाजपा सांसद श्रीमती मेनका गाँधी, प0 बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी, राज्यसभा की पहली महिला उपसभापति श्रीमती नजमा हेपुतुल्ला, उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री व बसपा अध्यक्ष मायावती, जम्मू कश्मीर की वर्तमान मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती, राजस्थान की मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे, गुजरात की पूर्व मुख्यमंत्री आनन्दी बेन पटेल, मध्य प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती, बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती राबड़ी देवी आदि महिलाओं ने प्रत्यक्षतः भारत की आधुनिक राजनीति को अपने शासन काल में एक नई दिशा प्रदान की है। वर्तमान में 16 वीं लोकसभा में महिला सांसदों की संख्या 61 है। इस लोकसभा की अध्यक्ष भी एक महिला हैं। लोकसभा अध्यक्ष सुश्री सुमित्रा महाजन एक कुशल राजनेत्री हैं।

अध्ययन के दौरान अन्य अगणित महिलाओं के नाम पढ़ने में आये हैं, किन्तु जिस देश की जनसंख्या 125 करोड़ हो और महिलाएँ जनसंख्या का आधा भाग हों, तब यह मुमकिन नहीं कि उस आधी आबादी में से सक्रिय राजनीति में अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही सभी महिलाओं के नाम लिखे जा सकें।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत का प्रत्येक परिवार अंग्रेजों के खिलाफ लड़ी जाने वाली जंग में शामिल था। अनेक लोग ब्रिटिश भारत की पुलिस द्वारा पकड़े जाते और जेल भेज दिये जाते। वे लौटकर अपने घर तक भी नहीं आ पाते थे। उन ज्ञात–अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों में से सैकड़ा या हजार के अंकों में नाम दें, तो सिर्फ नामांकित ही स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्रेणी में आ सकेंगे और अन्य अनाम ही रह जायेंगे। उस समय या वर्तमान समय की सभी महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के विषय में नहीं लिखा जाकर कुछ विशिष्ट नाम ही इस शोध–पत्र में दिये जा सके हैं।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

निष्कर्ष–

भारत के सामाजिक व राजनीतिक विकास में भारतीय नारी की सक्रिय सहभागिता रही हैं। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक भारत के सर्वांगीण विकास में भारत की नारी निरन्तर सक्रिय रही है। इस शोधपत्र में सभी राजनेत्रियों के विषय में विस्तारपूर्वक लिखना सम्भव न होने के कारण सिर्फ उन्हीं नामों पर चर्चा हो सकी है, जिन्होंने समय–समय पर भारत की राजनीति में प्रत्यक्ष रुप से अपनी योजनाओं को कार्यान्वित कर भारतीय राजनीति में सक्रिय योगदान दिया है।

: सन्दर्भ सूची :

1. डॉ शीला रजवार : ''स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते सन्दर्भ'', ईस्टर्न बुक लिंकर्स, नई दिल्ली, संस्करण वर्ष 1989, पेज नं0 12
2. डॉ0 राधा कुमुद मुखर्जी : '' प्राचीन भारत'', रेनासां पब्लिशर्स, कलकत्ता, पृ0 सं0–29
3. बेनी प्रसाद माधव : '' हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता'', राजौरी गार्डन, दिल्ली, पृ0सं0–50
4. डॉ0 अम्बा प्रसाद सुमन : '' महाभारत के नारी पात्र'', वासन्ती प्रकाशन, ए–87, विवेकनगर, सहारनुपर– 1992, पृ0सं0–12
5. डॉ0 अम्बा प्रसाद सुमन : पूर्ववत्।
6. डॉ0 शीला रजवार : ''स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में नारी के बदलते सन्दर्भ, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, नई दिल्ली, पेज नं0–4
7. एम0सी0 आहूजा : इलेक्टोरल पॉलिटिक्स एण्ड जरनल इलेक्शन् इन इंडिया (1952–1998)'', मित्तल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, पेज नं0 275
8. डॉ0 उषा पांडेय : '' मध्ययुगीन साहित्य में नारी भावना'', हिन्दी साहित्य संसार, पृ0 सं0–20
9. प्रतियोगिता दर्पण, जुलाई 1999, पृ0 सं0– 2057
10. प्रतियोगिता दर्पण, पूर्ववत्।
11. हमारा इतिहास और नागरिक जीवन, भाग–2, पृ0सं0–139
12. शरद द्विवेदी : संसार की प्रसिद्ध महिलाएँ
13. प्रतियोगिता दर्पण : नवम्बर 1999, पृ0 सं0 652

14. डॉ0 उषा बाला : ''भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी'' भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, पृ0सं0 3,4

15. पूर्ववत्।

16. डॉ0 उषाबाला : ''भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी''।

17. फॉरेन पॉलीटिकल सीक्रेट प्रोसीडिंग नं0 1052, 12 फरवरी 1959, वोल्यूम–2, 1862 पृ0सं0 101, स्रोत– भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी, डॉ उषा।

18. होम पॉलिटिकल सीक्रेट प्रोसीडिंग, 18 जनवरी 1911

19. अगस्त स्ट्रगल रिपोर्ट : स्रोत डॉ0 उषा बाला

20. डॉ0 उषाबाला : ''भारत की महिला स्वतंत्रता सेनानी'', पृ0सं0–116

21. दैनिक जागरण : 17 नवम्बर 1999

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/06

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सुनीता दुआ एवं डॉ0 राजकुमार

For publication of research paper title

"भारत में नारी की राजनीतिक सहभागिता"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com